

## प्रतिवेदन

मंगलवार, 28 अप्रैल, 2026 को डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र, हिंदुस्तानी भाषा अकादमी तथा लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में भारत सरकार द्वारा घोषित "हमारा संविधान - हमारा स्वाभिमान" अभियान के अंतर्गत "अपने संविधान को जानें" विषय पर एक महत्त्वपूर्ण परिचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम संविधान के प्रति जागरूकता, लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रसार तथा युवाओं में राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक सराहनीय पहल सिद्ध हुआ।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा युवा पीढ़ी को भारतीय संविधान की मूल भावना, उसके आदर्शों, नागरिक अधिकारों एवं कर्तव्यों से परिचित कराना था। आज के बदलते सामाजिक और राजनीतिक परिवेश में संविधान की समझ और उसके प्रति सम्मान विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। इसी भावना को केंद्र में रखकर इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा बुद्धिजीवियों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. (डॉ.) लता शर्मा, प्राचार्या, लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान केवल एक विधिक दस्तावेज नहीं, बल्कि यह भारत की लोकतांत्रिक चेतना, सामाजिक न्याय और समानता का जीवंत आधार है। उन्होंने कहा कि संविधान ने प्रत्येक नागरिक को गरिमा के साथ जीने का अधिकार दिया है तथा यह राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य करता है। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे संविधान के सिद्धांतों को अपने व्यवहार और जीवन में उतारें।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सुधीर कुमार सिंह, प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। उन्होंने भारतीय संविधान की निर्माण प्रक्रिया, संविधान सभा के ऐतिहासिक

योगदान तथा संविधान निर्माताओं के दूरदर्शी विचारों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान विश्व के सबसे विस्तृत और प्रगतिशील संविधानों में से एक है, जिसमें न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मानवीय मूल्यों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

उन्होंने आगे कहा कि संविधान केवल शासन संचालन का दस्तावेज नहीं, बल्कि यह समाज के कमजोर, वंचित और पिछड़े वर्गों के अधिकारों का रक्षक भी है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे संविधान को पढ़ें, समझें और उसके संरक्षण में अपनी भूमिका निभाएँ, क्योंकि जागरूक नागरिक ही लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति होते हैं।

विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. राकेश पांडेय, लेखक एवं संपादक, मंचासीन रहे। उन्होंने अपने संबोधन में संविधान और समाज के गहरे संबंधों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संविधान सामाजिक परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि जब समाज में असमानता, भेदभाव और अन्याय की स्थिति उत्पन्न होती है, तब संविधान नागरिकों को न्याय दिलाने का मार्ग प्रशस्त करता है। कार्यक्रम के सूत्रधार के रूप में डॉ. अनिकेत जायसवाल, प्राध्यापक, दर्शन विभाग, मिरांडा हाउस ने अत्यंत प्रभावशाली शैली में कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने कार्यक्रम को सुव्यवस्थित, रोचक और संवादपरक बनाए रखा।

**मुख्य अतिथि** के रूप में **कर्नल आकाश पाटील, निदेशक, डॉ. अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र** उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान राष्ट्र की आत्मा है और उसके प्रति सम्मान प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, और संविधान की समझ उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में मार्गदर्शन देती है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुधाकर पाठक, अध्यक्ष, हिंदुस्तानी भाषा अकादमी मंचासीन रहे। उन्होंने भारतीय भाषाओं की महत्ता पर बल

देते हुए कहा कि संविधान की भावना तभी जन-जन तक पहुँचेगी, जब उसे मातृभाषाओं और भारतीय भाषाओं में सरल रूप में समझाया जाएगा। उन्होंने कहा कि भाषा लोकतंत्र का माध्यम है और संविधान जनचेतना का आधार।

परिचर्चा के उपरांत विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने अत्यंत उत्साह, ऊर्जा और ज्ञान के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता में संविधान के अनुच्छेदों, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों, नीति निर्देशक तत्वों, संवैधानिक संस्थाओं तथा संविधान संशोधनों से संबंधित प्रश्न पूछे गए। विद्यार्थियों ने अपनी तैयारी, जागरूकता और बौद्धिक क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

इस प्रतियोगिता ने विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना के साथ-साथ संविधान के अध्ययन के प्रति नई रुचि उत्पन्न की। कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित सभी प्रतिभागियों और दर्शकों ने प्रतियोगिता का भरपूर आनंद लिया तथा विजेताओं का उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। विजेताओं को प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही परिचर्चा में सम्मिलित सभी विद्यार्थियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

अंत में आयोजकों द्वारा सभी अतिथियों, वक्ताओं, शिक्षकों, प्रतिभागियों तथा सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ।

समग्र रूप से यह आयोजन अत्यंत सफल, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी और स्मरणीय रहा। इस कार्यक्रम ने विद्यार्थियों में संविधान के प्रति सम्मान, जागरूकता और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व की भावना को और अधिक सुदृढ़ किया। ऐसे आयोजन न केवल शैक्षणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण, सामाजिक समरसता और जागरूक नागरिकता के निर्माण में भी अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं।

